एशियाई सदी की ओर

लेखक - मुकुल सनवाल (पूर्व राजनयिक, संयुक्त राष्ट्र)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

12 अक्टूबर, 2019

"जैसा कि पश्चिम ने चीन और भारत के साथ संबंधों का पुनर्मूल्यांकन किया है, मामल्लापुरम में दोनों देशों के पास रिश्तों को बेहतर करने का अच्छा अवसर है।"

जैसा कि हम जानते हैं कि भारत और चीन सभ्यतागत देश हैं, साथ ही ये पड़ोसी और भविष्य की तीन वैश्विक शक्तियों में से दो शक्तियां भी हैं, मामल्लापुरम में नरेंद्र मोदी-शी जिनपिंग शिखर सम्मेलन में एक सवाल यह उठता है कि क्या हम चीन के साथ-साथ जो अमेरिका को समझने का दावा करते हैं, वो सही है?

पश्चिमी लेबल चीन और भारत जैसे सभ्यतागत कार्यों की व्याख्या नहीं करते हैं। दोनों देशों के परिवर्तनकारी नेता एक नई विकास प्रतिमान और विश्व व्यवस्था के दृष्टिकोण के साथ अद्वितीय राष्ट्रीय समस्याओं का जवाब दे रहे हैं। दोनों पश्चिमी विचारों और संस्थानों पर स्पष्ट रूप से सवाल उठाते हैं क्योंकि वे वैश्विक नियमों को स्थापित करने में अपना वैध स्थान चाहते हैं। अभिसारी लक्ष्यों के साथ उनके दृष्टिकोण अलग-अलग हैं।

चीन का अनोखा रोडमैप

चीन के दो शताब्दी के लक्ष्यों पर ध्यान दें, तो हम पाएंगे कि इसमें 2021 तक गरीबी को समाप्त करना और 2049 तक एक उन्नत समाजवादी राष्ट्र की स्थापना करना शामिल है। सोवियत संघ के पतन से चीनी नेतृत्व को जो सबक मिला, वह यह था कि बेहतर शासन केवल परिवारों की आय में निरंतर वृद्धि से आएगा और परिवारों के ऐसे लोग बूढ़े होने से पहले समृद्ध हो जाने चाहिए। चीन की 'स्थिरता' की अवधारणा बहुत ही अलग है।

तो फिर, चीन ने क्या किया? सबसे पहले, इसने वृद्धि को दोनों सकल घरेलू उत्पाद, जो प्रांतीय प्रमुखों के लक्ष्य के रूप में है, और प्रति व्यक्ति आय के रूप में परिभाषित किया, जिस पर कम्युनिस्ट पार्टी ने निगरानी रखी। हम जानते हैं कि चीन अब दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और उसके पास 3 ट्रिलियन डॉलर से अधिक का विदेशी मुद्रा भंडार है। जिस बारे में सबको कम जानकरी है वह यह कि 1998 से 2008 तक अमेरिका में मध्यम वर्ग की आय केवल 4% तक बढ़ी और और चीन में 70% तक बढ़ी। यही कारण है कि व्यापार में विपरीत स्थिति और विकास में कम वृद्धि के बावजूद, खपत-आधारित अर्थव्यवस्था में जाना सफलता का कारण बनता है।

दूसरा, चीन ने आर्थिक गतिविधियों और शहरों में कल्याण के लिए बुनियादी ढांचे के महत्व को महसूस किया। वर्ष 2000 से निर्माण कार्य में तेजी आई। तीन वर्षों में चीन ने सीमेंट क्षमता में इतनी वृद्धि की जितनी अमेरिका ने सौ वर्षों में की थी। इसने 2013 में सीमेंट, स्टील और बिजली उत्पादन में संतृप्ति स्तर हासिल किए। तब तक आधी से अधिक आबादी शहरों और मध्य वर्ग में चली गई थी। आज चीन में शिक्षा, स्वास्थ्य, नगरपालिका सेवाओं और सार्वजनिक परिवहन का स्तर दुनिया में सबसे बेहतर की श्रेणी में आता है।

तीसरा, चीन के विकास मार्ग का विकल्प पश्चिम की तुलना में बहुत कम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता है और जब हम आबादी को ध्यान में रख कर सोचते हैं, तो यह उल्लेखनीय रूप से कार्बन कुशल भी है। विकास लक्ष्य को अब केवल जीडीपी के संदर्भ में परिभाषित नहीं किया गया है। एजेंडा पर पर्यावरण संबंधी चिंताएं बहुत अधिक हैं और बिजली संयंत्रों से कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन को रोकने के लिए एक उत्सर्जन व्यापार प्रणाली स्थापित की गई है।

बिजली की खपत, कार का स्वामित्व और खाद्य अपशिष्ट जैसे मुद्दों अमेरिका के दसवें हिस्से पर बने हुए हैं। यह प्रवृत्ति आय में वृद्धि के रूप में नहीं बदल रही है क्योंकि यह सभ्यतागत मूल्यों पर आधारित है जो पश्चिमी मूल्यों से बहुत भिन्न हैं। चौथा, चीनी केवल चुपके से नहीं, बल्कि समझदारी से वैश्विक प्रौद्योगिकी नेता बने हैं। ऐसे समय में जब हाई-स्पीड ट्रेनों और परमाणु संयंत्रों की कोई मांग नहीं थी, उदाहरण के लिए, चीन ने सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी के लिए भुगतान किया और उसमें सुधार किया है। इसकी हाई-स्पीड ट्रेनें 300 किमी/घंटे की चाल से चलती हैं। चीन परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का निर्यात कर रहा है। हुआवेइ (Huawei) 5G तकनीक में वैश्विक नेता है और सबसे सस्ता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्वांटम कंप्यूटिंग में वैश्विक नेतृत्व करने का चीन का राष्ट्रीय लक्ष्य अमेरिका के साथ दरार पैदा करने के लिए काफी है।

पार्टी की भूमिका

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी पश्चिम में राजनीतिक दलों के विपरीत है। आपको सदस्य बनने के लिए आमंत्रित किया जायेगा और विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग में एक पार्टी सचिव होता है, जिसे डीन रिपोर्ट करता है। फिर भी छात्र लोकतंत्र पर विचार कर सकते हैं और सर्वव्यापी डिजिटल निगरानी को अपनी प्रगति में ले सकते हैं। चीन ने नोट किया है कि प्रत्येक पश्चिमी देश का अपना राजनीतिक संगठन है और वह जमीनी स्तर पर चुनाव के लिए तैयार हो गया है। पार्टी स्कूल वर्तमान चिंताओं पर नियमित कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

चीन ने अपने नेताओं को कैसे चुना, यह पश्चिम के संदर्भ में सबसे दिलचस्प और विपरीत है। वे स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि 'तियानमेन स्क्वायर' की घटना अपरिहार्य थी, क्योंकि जनरलों ने चिंताओं पर बिना विचार करे टैंक भेज दिया था।

चीन अब दुनिया पर कम निर्भर है और अब जैसे-जैसे यह एक उच्च तकनीक की खपत वाली अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, उसे यू.एस. जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जहाँ शहरी मध्य वर्ग के बच्चे अब मध्यम वर्ग का रोजगार चाहते हैं। पिछले कुछ वर्षों से सिंघुआ में छात्रों की यह चिंता रही है कि उन्हें अब वैसे काम नहीं मिल रहे हैं जैसा वे चाहते हैं।

मध्य चीन में वुहान वर्तमान में सार्वजनिक-निजी भागीदारी के साथ 30 बिलियन डॉलर के उच्च-तकनीकी अनुसंधान केंद्र की स्थापना कर रहा है क्योंकि चीन ने देखा है कि यह डिजिटल अर्थव्यवस्था मध्यवर्गीय रोजगार का सृजन कर रही है। यह बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) को दूसरे देशों के साथ शहरों को जोड़ने वाले हिस्से में समझाता है। मध्य आय के जाल से बाहर निकलने का यह विचार अब पार्टी और राष्ट्रीय संविधान में है, जो पश्चिम में 'उदारवाद' के समान है।

मोदी कारक

इस परिदृश्य में नया विकास डोनाल्ड ट्रम्प नहीं, बल्कि 'मोदी कारक' है। चीन यह स्वीकार करता है कि वह अपने लक्ष्यों को तभी प्राप्त करेगा जब कोई एशियाई सदी हो और उसे भारत जैसी दूसरी सभ्यता शक्ति के साथ काम करने की आवश्यकता है, जिसने वैश्विक व्यवस्था में खुद को बेहतर बनाया है।

सीमा पर यथास्थिति बनाए रखने पर आगे आंदोलन एक गैर-आक्रामकता संधि के साथ संभव है। अब सवाल उठता है कि भारत अपने 5G तकनीक को बेहतर बनाने के लिए क्यों नहीं हुआवेइ से जुड़ रहा है, जहाँ हुआवेइ वैश्विक स्तर पर डिजिटल इनोवेशन के भविष्य को संयुक्त रूप से बेचना चाहता है? ऐसा होने पर निश्चित रूप से भारत को लाभ होगा। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में दो ध्रुवों के साथ एशियाई सदी के वैचारिक ढांचे पर भी चर्चा शुरू हो सकती है, जिससे दोनों देशों के साथ अन्य एशियाई देशों को भी लाभ मिलेगा।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. चीन के परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. यह अब सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और इसके पास 3 ट्रिलियन डॉलर से अधिक विदेशी मुद्रा भंडार है।
2. 2018 में चीन के खुदरा ई कॉमर्स अगले 10 देशों से अधिक रही है।
3. 2015 में चीन में सीमेंट, स्टील और रसायन उत्पादन में संतृप्ति स्तर हासिल कर लिया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से कथन सत्य हैं?

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3

(c) 1 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

Expected Questions (Prelims Exams)

1. Consider the following statements in the context of China -

1. It is now the largest economy and has more than 3 trillion dollars of foreign exchange reserves.
2. China's retail e-commerce has surpassed the next 10 countries in 2018.Which of the
3. In 2015, cement, steel and chemical production in China achieved saturation levels.

statements given above are correct?

(a) 1 and 2 (b) 2 and 3

(c) 1 and 3 (d) All of the above

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: क्या एशियाई सदी की परिकल्पना को चीन और भारत का सहयोगी रवैया व्यावहारिक बना सकता है? दोनों देशों के मध्य किस प्रकार के मुद्दों पर वर्तमान में सहयोग स्थापित किया जा सकता है? चर्चा कीजिए।

(250 शब्द)

Can China and India's collaborative approach make the Asian Century practical? Discuss what kind of issues can be established between these two countries at present?

(250 Words)

नोट : 11 अक्टूबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।